मधुबन ओम् शान्ति अंक 383 जून 2024

पत्र-पुष्प

"याद की विधि और धन की वृद्धि साथ-साथ करने वाले कर्मयोगी बनो"

(दादी जी 22-05-2024)

परमप्यारे अव्यक्त मूर्त मात-पिता बापदादा के अति स्नेही, सदा हर कर्म योगयुक्त, युक्तियुक्त और शक्तियुक्त करने वाले, कर्मयोगी सो सहज राजयोगी, निमित्त टीचर्स बहिनें तथा राजयोगी जीवन बनाने वाले सर्व देश विदेश के ब्राह्मण कुल भूषण, बाबा के नूरे रत्न,

ईश्वरीय स्नेह सम्पन्न मधुर याद स्वीकार करना जी।

बाद समाचार - वर्तमान समय मधुबन बेहद घर की अलौकिक सेवाओं के समाचार तो आप सब सुनते देखते सदा आनंद का अनुभव कर रहे होंगे! बाबा कैसे अनेकानेक बच्चों को अपने बेहद घर में आकर्षित कर आध्यात्मिक शक्तियों का अनुभव करा रहे हैं। मधुबन के सभी स्थानों पर योग शिविर, योग भट्ठियां तथा विंग्स के कार्यक्रम चल रहे हैं। समय प्रमाण मीठे बाबा का विशेष इशारा है कि बच्चे, अब स्थूल कर्म, कर्मयोगी की स्टेज में परिवर्तन करो। आप सिर्फ कर्म करने वाले नहीं हो, कर्मयोगी हो, इसके लिए हर कर्म में सदा निमित्त मात्र का मंत्र वा करनहार की स्मृति का संकल्प याद रहे, करावनहार भूले नहीं, इससे सदा निर्माण ही निर्माण करते रहेंगे। कोई भी कार्य करते यही स्मृति रहे कि यह कार्य ईश्वरीय सेवार्थ है। तो सदा हल्के बन, खुशी-खुशी से कर्म करने से कर्मयोगी सहजयोगी बन जायेंगे। बोलो, मीठे-मीठे भाई बहनें ऐसा ही अनुभव करते हो ना! कर्म करते धर्म अर्थात् अपने जीवन की धारणायें सदा याद रहती हैं ना!

वर्तमान समय साकार मुरलियों में बापदादा हम बच्चों को विशेष इशारा दे रहे हैं कि बच्चे, सदा देही-अभिमानी व अशरीरी स्थिति में रहने का अभ्यास करते रहो। ज्ञान की इस ऊंची मंजिल में अनेक प्रकार के चढ़ाव उतराव में बाबा के साथ और हाथ से मंजिल सदा सामने अनुभव होगी। जब लक्ष्य है कि हमें अपनी मंजिल पर पहुँचना ही है तो कोई बड़े से बड़ी बात भी सामना करने भले आ जाए, उसमें हमें रूकना नहीं है, उसे साइडसीन समझ पार कर लेना है। बाबा कहते बच्चे, सदा ध्यान रहे कि अब व्यर्थ संकल्पों का भी वार न हो, इसके लिए अन्तर्मुखी, एकान्तवासी बन तपस्या करते चलो। निरन्तर योगी, निरन्तर सेवाधारी बनने के लिए तीन बातें याद रखनी है: 1- हम बापदादा की छत्रछाया के नीचे हैं। बाबा का वरदानी हाथ हमारे सिर पर है, इसलिए माया का कोई भी वार हार नहीं खिला सकता। याद की यह छतरी सबसे बड़ी सेफ्टी का साधन है। 2- मैं आत्मा उस सर्वशक्तिवान बाप के साथ कम्बाइन्ड हूँ। कभी निराकार रूप में बाबा के साथ कम्बाइन्ड रूप का अनुभव करो। कभी आकारी रूप में बापदादा के साथ कम्बाइन्ड हो जाओ। तो उनकी मदद का सदा अनुभव होता रहेगा। 3- करावनहार करा रहा है। मैं आत्मा निमित्त करनहार बन कर्म कर रही हूँ। यज्ञ सेवा का कोई भी श्रेष्ठ कार्य करते सदा यही स्मृति रहे कि मीठे बाबा ने करा लिया, कभी कर्तापन का भान न आये। कराने वाला करा रहा है, चलाने वाला चला रहा है, यह स्मृति निमित्त और निर्माणचित बना देगी।

बोलो, अभी समय प्रमाण इन्हीं श्रेष्ठ स्मृतियों के साथ अच्छे से अच्छी स्थिति बनाते हुए उड़ती कला में उड़ रहे हो ना! अच्छा - आप सबका स्वास्थ्य ठीक होगा। सभी को बहुत-बहुत याद.....

ईश्वरीय सेवा में,

बी.के. रतनमोहिनी

ये अव्यक्त इशारे

कर्मयोगी बनो

1) कर्मयोगी अर्थात् हर कर्म योग-युक्त, युक्ति-युक्त, शक्ति-युक्त हो। सिर्फ बैठकर योग करने वाले नहीं। योगी जीवन है अर्थात् योग-युक्त हैं। कर्मयोगी किसी भी कर्म की तरफ आकर्षित नहीं होते, वह अपनी योगशक्ति से कर्मेन्द्रियों द्वारा कर्म कराते हैं। जो कर्म के वश होकर चलने वाले हैं उनको कर्मयोगी नहीं कह सकते।

2) कर्मयोगी कर्म के भोग भोगने में अच्छे व बुरे में कर्म के वशीभूत नहीं हो सकते। कर्मयोगी नाम सिद्ध करता है कि योगी हैं अर्थात् निराकारी आत्मिक स्वरुप में स्थित होकर कर्म करने वाले हैं। जैसे कर्म के बिना एक सेकेण्ड भी रह नहीं सकते, वैसे ही याद अर्थात् योग के बिना भी एक सेकेण्ड रह नहीं सकते, इसलिए कर्म के साथ योगी नाम भी साथ-साथ ही है।

3) जैसे कर्म स्वत: ही चलते रहते हैं, कर्मेन्द्रियों को नेचुरल अभ्यास है। ऐसे ही बुद्धि को याद का नेचुरल अभ्यास होना चाहिए। इन कर्मेन्द्रियों का आदि-अनादि अपना-अपना कार्य है। हाथ को हिलाने व पाँव को चलाने में कोई मेहनत नहीं करनी पड़ती, उसी प्रमाण ब्राह्मण जीवन का तथा इस संगमयुगी जीवन में बुद्धि का निजी कार्य व जन्म का कार्य है बाप को याद करना। जीवन का जो निजी कार्य होता है वह नेचुरल और सहज ही होता है। तो अपने को सहज कर्मयोगी अनुभव करो।

4) याद की विधि और धन की वृद्धि दोनों साथ-साथ हो तब कहेंगे कर्मयोगी। धन की वृद्धि के पीछे विधि को छोड़ नहीं देना। लौकिक स्थूल कर्म, कर्मयोगी की स्टेज में परिवर्तन करो। सिर्फ कर्म करने वाले नहीं लेकिन कर्मयोगी। ईश्वरीय सेवा में सदा निमित्त मात्र का मंत्र वा करनहार की स्मृति का संकल्प याद रहे, करावनहार भूले नहीं, यही कर्मयोगी स्टेज है, इससे सदा निर्माण ही निर्माण करते रहेंगे।

5) कर्म अर्थात् व्यवहार, योग अर्थात् परमार्थ। परमार्थ अर्थात् परमपिता की सेवा अर्थ। तो व्यवहार और परमार्थ दोनों साथ-साथ रहें इसको कहा जाता है श्रीमत् पर चलने वाले कर्मयोगी। मैं सिर्फ व्यवहारी नहीं लेकिन व्यवहारी और परमार्थी अर्थात् जो कर रहा हूँ, वह ईश्वरीय सेवा अर्थ कर रहा हूँ। इस स्मृति से एक ही तन द्वारा एक ही समय मन और धन की डबल कमाई होती रहेगी।

6) जैसे निमित्त बनी हुई आत्माओं को कर्म करते हुए देखते हो कैसे हल्के बन, खुशी खुशी से कर्म करते हैं, इन्हों से सहज कर्मयोगी बनने की प्रेरणा मिलती है। कर्मयोगी बनने के लिए अपनी ऊंची स्थिति और असली स्थान को सदा स्मृति में रख कार्य करने अर्थ नीचे आओ, तो कितना भी कार्य करते कर्मयोगी रहेंगे।

7) अभी सहज और सदा के कर्मयोगी अर्थात् निरन्तर निर्विकल्प समाधि में रहने वाले सहज योगी बनो। जो सदा कर्मयोगी रहते हैं वह सदाचारी रहते हैं। जैसे धर्म और कर्म, दोनों को अलग नहीं कर सकते। कोई भी कर्म करते हुए धर्म अर्थात् धारणा भी सम्पूर्ण हो। कर्म में जब बहुत बिजी रहते हो, तब धारणा भी इतनी रहे। दोनों तराजू का तरफ एक समान रहे, तब कहेंगे श्रेष्ठ वा दिव्य बुद्धिवान, कर्मयोगी आत्मा।

8) जैसे कला दिखाने वाले कलाबाज वा सर्कस में काम करने वाले हर कर्म करते हुए, हर कर्म में अपनी कलाबाजी दिखाते हैं। उन्हों का हर कर्म कला बन जाता है। ऐसे आप श्रेष्ठ आत्मायें, कर्मयोगी, निरंतर योगी, सहजयोगी, राजयोगी हर कर्म को न्यारे और प्यारे रहने की कला में रहकर करो। आपके अलौकिक कर्म की कला को देखने के लिए सारे विश्व की आत्मायें इच्छुक बनकर आयेंगी।

9) आप सबको बाप द्वारा शुद्ध प्रवृत्ति मिली हुई है, बुद्धि की प्रवृत्ति है शुद्ध संकल्प करना, वाणी की प्रवृत्ति है जो बाप द्वारा सुना वह सुनाना, कर्म की प्रवृत्ति है कर्मयोगी बन हर कर्म करना, कमल समान न्यारा और प्यारा बन रहना, हर कर्म द्वारा बाप के श्रेष्ठ कार्यों को प्रत्यक्ष करना, हर कर्म चरित्र रूप से करना। चतुराई नहीं लेकिन चरित्र, वह भी दिव्य चरित्र हो तब कहेंगे कर्मयोगी।

10) योग माना ही याद का अटेंशन, जैसे कर्म नहीं छोड़ सकते वैसे याद भी न छूटे, इसको कहा जाता है कर्मयोगी। कर्मयोगी अर्थात् हर कर्म द्वारा बाप से स्नेह और सम्बन्ध का

हर आत्मा को साक्षात्कार हो। जैसे हद की आत्माओं से स्नेह रखने वाली आत्मा के चेहरे और चलन से दिखाई देता है कि यह कोई के स्नेह में लवलीन है। ऐसे हर कर्म बाप के साथ स्नेही आत्मा का अनुभव कराये तब कहेंगे कमयोगी।

11) कर्मयोगी वा सहज राजयोगी का हर संकल्प बाप के स्नेह के वायब्रेशन फैलाने वाला होगा, जैसे जड़ चित्र शान्ति के अल्पकाल के सुख के वायब्रेशन अब तक भी आत्माओं को देने का कार्य कर रहे हैं, ऐसे आप चैतन्य रूप में संकल्प द्वारा, वाणी द्वारा, कर्म द्वारा विश्व में सदा सुख-शान्ति बाप के स्नेह के वायब्रेशन फैलाने का कर्तव्य करो, यही है कर्मयोगी स्टेज।

12) जैसे साइन्स का यंत्र गर्मी या सर्दी का वायुमण्डल बना देता है, ऐसे आप मास्टर सर्वशक्तिवान आत्मायें अपने साइलेन्स अर्थात् याद की शक्ति से, अपने लगन की स्थिति द्वारा जो भी वायुमण्डल या वायब्रेशन फैलाना चाहो वह फैला सकते हो। इसके लिए प्रैक्टिस करो, अपने निज़ी स्वधर्म में स्थित हो सुख, शान्ति व शक्ति का वायुमण्डल बना दो। उस वायुमण्डल में जो भी आत्मा आये वह महसूस करे कि यहाँ बहुत सुख, शान्ति व शक्ति प्राप्त हो रही है।

13) आप सबको अपनी प्राप्ति के आधार से, याद के आधार से अनुभवी बनकर दूसरों को अनुभव कराना यही है वास्तविक सहज राजयोग या कर्मयोग की परिभाषा। स्वयं प्रति शान्ति का या शक्ति का अनुभव किया, यह कोई बड़ी बात नहीं लेकिन अपने याद की शक्ति द्वारा अब विश्व में वायब्रेशन द्वारा वायुमण्डल बनाओ तब कहेंगे नम्बरवन सहज राजयोगी, कर्मयोगी।

14) कर्म करते हुए बार-बार अटेन्शन दो कि बाप की याद और सेवा में तत्पर हैं! सदा यह याद रखो कि हर कर्मेन्द्रियों द्वारा बाप की याद की स्मृति दिलाने की सेवा करनी है। हर संकल्प द्वारा विश्व कल्याण का अर्थात् लाइट हाउस का कर्तव्य करना है। हर सेकेण्ड की पावरफुल वृत्ति द्वारा चारों ओर पावरफुल वायब्रेशन फैलाना है, हर कर्म द्वारा हर आत्मा को कर्मयोगी भव का वरदान देना है। हर कदम में स्वयं प्रति पदमों की कमाई जमा करना है। संकल्प, समय, वृत्ति और कर्म चारों को सेवा प्रति लगाना, यही है कर्मयोगी स्टेज।

15) कर्मयोगी का हर कर्म चरित्र के समान गायन योग्य होता है। हर कर्म की महिमा कीर्तन करने योग्य होती है। जैसे भक्त लोग कीर्तन में वर्णन करते हैं कि इनका देखना अलौकिक, चलना अलौकिक, हर कार्य इन्द्रियों की महिमा अपरमपार करते रहते हैं, ऐसे हर कर्म महान अर्थात् महिमा योग्य हो। हर कर्म त्रिकालदर्शी बन करने से कभी भी कोई कर्म विकर्म नहीं हो सकता, सदा सुकर्म होता है।

16) कर्मयोगी आत्मा सदा साक्षी दृष्टा बन कर्म करने के कारण किसी भी कर्म के बन्धन में कर्मबन्धनी आत्मा नहीं बन सकती। कर्म का फल श्रेष्ठ होने के कारण कर्म सम्बन्ध में आते हैं, बन्धन में नहीं। सदा कर्म करते हुए भी न्यारे और बाप के प्यारे अनुभव करते हैं। ऐसी न्यारी और प्यारी आत्मायें अभी भी अनेक आत्माओं के सामने दृष्टान्त अर्थात् एक्जैम्पुल बनती हैं उन्हें देखकर अनेक आत्मायें स्वत: कर्मयोगी बन जाती हैं।

17) जैसे साकार में कहीं भी आने जाने की सहज प्रैक्टिस हो गई है। ऐसे ही आत्मा को अपनी कर्मातीत अवस्था में रहने की भी प्रैक्टिस हो। अभी-अभी कर्मयोगी बन कर्म में आये, कर्म समाप्त हुआ फिर कर्मातीत अवस्था में चले गये। निमित्त मात्र कर्म करने के लिए कर्मयोगी बने फिर कर्मातीत। इसके लिए स्वयं को ट्रस्टी समझ डबल लाइट रहो। जैसे कर्म में आना स्वाभाविक हो गया है, वैसे कर्मातीत होना भी स्वाभाविक हो जाए।

18) लास्ट आते भी फास्ट जाने का सहज साधन है – सदा कर्मयोगी बनकर रहना। कर्म भी करो और याद में भी रहो, कर्म में इतना बिजी न हो जाओ जो अपना ओरीज्नल स्वरूप भी विस्मृति में आ जाए। अपनी आत्मिक स्थिति में रहकर, शरीर का आधार लो, कर्मेन्द्रियों से कर्म कराया, कर्म पूरा हुआ न्यारे हो गये, यही कर्मयोगी की स्टेज सहज कर्मातीत बना देगी। जब चाहें कर्म में आयें और जब चाहें न्यारे हो जायें।

19) जैसे शरीर और आत्मा दोनों कम्बाइन्ड होकर कर्म करते हैं, ऐसे कर्म और योग दोनों कम्बाइन्ड रहें। कर्म करते याद न भूले और याद में रहते कर्म न भूले। आपका टाइटल है कर्मयोगी। कर्म करते याद में रहने वाले सदा न्यारे और प्यारे होंगे, हल्के होंगे, किसी भी कर्म में बोझ अनुभव नहीं करेंगे। कर्मयोगी को ही दूसरे शब्दों में कमल पुष्प कहा जाता है। उनके ऊपर कभी किसी भी प्रकार का कीचड़ अर्थात् माया का वायब्रेशन टच नहीं कर सकता।

20) फरिश्तों की दुनिया में रहकर इस साकार दुनिया में कर्म करने के लिए आओ। कर्म किया, कर्मयोगी बने फिर फरिश्ते बन जाओ। यही अभ्यास करते रहो। सदा यही स्मृति रहे कि मैं फरिश्तों की दुनिया में रहने वाला अव्यक्त फरिश्ता, फर्श निवासी नहीं, अर्श निवासी हूँ। फरिश्ता अर्थात् इस विकारी दुनिया, अर्थात् विकारी दृष्टि वा वृत्ति से परे रहने वाले।

21) जैसे बाप न्यारा होते हुए प्रवेश कर कार्य के लिए आते हैं, ऐसे फरिश्ता आत्मायें भी कर्मबन्धन के हिसाब से नहीं लेकिन सेवा के बन्धन से शरीर मे प्रवेश हो कर्म करते और जब चाहे तब न्यारे हो जाते। यह ब्राह्मण जीवन कर्मबन्धन का जीवन नहीं, कर्मयोगी जीवन है। तो मालिक बन कर्म करो, कर्म पूरा हुआ तो न्यारे फरिश्ता बन जाओ।

22) अभी हर कर्म खुशियों में नाचते गाते हुए करो। जैसे स्थूल डांस में सारे शरीर की ड्रिल हो जाती है। भिन्न-भिन्न पोज़ से डांस करते हैं। ऐसे खुशी के डांस में भिन्न-भिन्न कर्मों के पोज़ करो। कभी हाथ से कोई कर्म करते, कभी पांव से... तो यह काम नहीं करते हो लेकिन भिन्न-भिन्न डांस के पोज़ करते हो। तो कर्मयोगी बनना अर्थात् भिन्न-भिन्न प्रकार की खुशी में नाचना।

23) कर्मयोगी बन कर्म का पार्ट बजाना है लेकिन जब फुर्सत मिले तो सूक्ष्मवतन व मूलवतन में चले जाओ। जैसे कार्य से फ़ुर्सत मिलने के बाद घर में चले जाते हो ना। दफ्तर का काम पूरा हुआ, घर में चले गये। ऐसे स्मृति रहे कि मेरा परमधाम घर अभी सामने खड़ा है। अभी-अभी यहाँ, अभी-अभी वहाँ। साकारी वतन के कमरे से निकल मूलवतन के कमरे में चले गये।

24) कोई भी कार्य करते बाप की याद में लवलीन रहो। कर्मयोगी अर्थात् याद में रहते हुए कर्म करने वाला, वह सदा कर्मबन्धन मुक्त रहता है। उसे अनुभव होता कि कर्म नहीं कर रहे हैं लेकिन खेल कर रहे हैं। उन्हें किसी भी प्रकार का बोझ वा थकावट महसूस नहीं होगी। कर्मयोगी अर्थात् कर्म को खेल की रीति से न्यारे होकर करने वाले। वह कर्मेन्द्रियों द्वारा कार्य करते बाप के प्यार में लवलीन रहने के कारण बन्धनमुक्त बन जाते हैं।

25) कर्मयोगी कभी अच्छे वा बुरे कर्म करने वाले व्यक्ति के प्रभाव में नहीं आते। ऐसा नहीं कि कोई अच्छा कर्म करने वाला कनेक्शन में आये तो उसकी खुशी में आ जाओ और कोई अच्छा कर्म न करने वाला सम्बन्ध में आये तो गुस्से में आ जाओ या उसके प्रति ईर्ष्या वा घृणा पैदा हो। यह भी कर्मबन्धन है। कर्मयोगी के आगे कोई कैसा भी आ जाए, वह स्वयं सदा न्यारा और प्यारा रहेगा। नॉलेज द्वारा जानेगा, इसका यह पार्ट चल रहा है, इसलिए अच्छे को अच्छा समझकर साक्षी होकर देखो और बुरे को रहमदिल बन रहम की निगाह से परिवर्तन करने की शुभ भावना से साक्षी हो देखो, तब कहेंगे कर्मबन्धन से न्यारे कर्मयोगी।

26) ब्राह्मण आत्मा अर्थात् हर कर्म में बापदादा को प्रत्यक्ष करने वाली। कर्म की कलम से हर आत्मा के दिल पर, बुद्धि पर, बाप का चित्र वा स्वरूप खींचने वाले रूहानी चित्रकार हो। अभी ब्रह्मा बाप की आप बच्चों के प्रति यही एक आशा है कि हर बच्चा अपने कर्मों के दर्पण द्वारा बाप का साक्षात्कार कराये अर्थात् हर कदम में फालो फादर कर बाप समान अव्यक्त फरिश्ता बन कर्मयोगी का पार्ट बजाये।

27) सदा दिल में बाप ही समाया हुआ है इसलिए अच्छे तीव्र पुरुषार्थ में चल रहे हो। कर्मयोगी आत्मा हो ना। कर्म और योग कम्बाइन्ड है ना। सदा बैलेन्स रख, बाप की ब्लैसिंग को लेने वाले और सदा ब्लिसफुल जीवन में रहने वाले। ऐसी श्रेष्ठ आत्मा हो। बाप सदा हर बच्चे प्रति यही शुभ आश रखते कि यह विजय माला का मणका बनें, इसके लिए कम्बाइन्ड स्वरूप से सेवा करो।

28) भल यह पुराना शरीर है लेकिन बलिहारी इस अन्तिम शरीर की है जो श्रेष्ठ आत्मा इसके आधार से अलौकिक अनुभव करती है। तो आत्मा और शरीर कम्बाइन्ड है। पुराने शरीर के भान में नहीं आना है लेकिन मालिक बन इस द्वारा कार्य कराने हैं, इसलिए आत्म-अभिमानी बन कर्मयोगी बन कर्मेन्द्रियों द्वारा कर्म कराते चलो। कर्तापन के भान से, मैं करता हूँ, मैंने किया... यह मैं पन से मुक्त रह कर्म करना ही कर्मयोगी स्टेज है।

29) कर्मयोगी का पार्ट बजाते कर्म और योग का बैलेन्स चेक करना कि कर्म और याद अर्थात् योग दोनों ही शक्तिशाली रहे? अगर कर्म शक्तिशाली रहा और याद कम रही तो बैलेन्स नहीं और याद शक्तिशाली रही, कर्म शक्तिशाली नहीं तो भी बैलेन्स नहीं। तो कर्म और याद का बैलेन्स रखते रहना। सारा दिन इसी श्रेष्ठ स्थिति में रहने से कर्मातीत अवस्था के नजदीक आने का अनुभव करेंगे। सारा दिन, चलते फिरते खाते-पीते कर्मातीत स्थिति वा अव्यक्त फरिश्ते स्वरूप की स्थिति में रहना, यही कर्मयोगी स्टेज है।

30) जैसे शारीरिक व्याधि कर्म भोग अपनी तरफ बार-बार खींचता है, दर्द होता है तो खींचता है ना। तो कहते हो क्या करें, वैसे तो ठीक है लेकिन कर्मभोग कड़ा है। ऐसे कोई भी विशेष पुराना संस्कार वा स्वभाव वा आदत अपने तरफ खींचती है तो वह भी कर्म भोग हो गया। कोई भी कर्मभोग, कर्मयोगी नहीं बना सकेगा, इसलिए बार-बार अशरीरी पन की ड्रिल करते शरीर के भान को छोड़ते जाओ।

"गुल्जार दादी तथा दादी जानकी जी से टीचर्स बहिनों की रूहरिहान"

(प्रश्न-उत्तर 07-07-09)

जैसे साकार में बाबा ने प्यार किया, ऐसे अभी हम अव्यक्त फरिश्ता रूप की स्थिति में स्थित रहें, तो फरिश्ता मिलन में साकार रूप से भी ज्यादा अनुभव हो सकते हैं। अव्यक्त रूप में फरिश्ता बनकर अगर हम मिलते हैं तो वो जैसेकि हमेशा के लिए दिल में समा जाता है। साकार में प्यार किया, उस समय बहुत अच्छे अनुभव होते हैं फिर भूल भी सकते हैं। लेकिन फरिश्ते रूप में अभी जो जो बाबा प्यार करता है, वह प्यार स्थाई रह सकता है। अभी ही उस प्यार वा आंनद का अनुभव कर सकते हो।

प्रश्नः- दादी जी, हमने सुना है कि आपकी लौकिक दादी आपको बहुत प्यार करती थी, जब वह अपने हाथ से आपको खिलाती थी तब आप भोजन खाती थी, इतना प्यार से पले लेकिन आपने बाबा में ऐसा क्या देखा जो सबकुछ छोड़कर बाबा पर आप इतनी छोटी आयु में फिदा हो गये? आपको बाबा से क्या मिला? आपने बाबा में क्या देखा और बाबा ने आपमें क्या देखा?

उत्तरः- लौकिक दादी का हमसे प्यार जरूर था लेकिन जब हम यहाँ आये, तो बाबा ने हमें इतना प्यार से पाला जो मैं कह सकती हूँ, लक्ष्मी-नारायण के बच्चे को भी इतना प्यार नहीं मिलेगा क्योंकि बाबा हमको जब गुडमार्निंग और गुडनाईट करता था, खाना खाते वक्त भी चक्कर लगाता था, कभी किसी का चेहरा थोड़ा ऐसे होता तो बाबा उन्हें बुलाता था और बांहों में लेकर पूछता था बच्ची ठीक हो ना! बाबा के उस मिलने की खुशी में बात पूरी हो जाती थी। बाबा ऐसी कोई बात कहके, हंसाके हल्का कर देता था। तो इतना प्यार दादी तो क्या, दादी के माँ-बाप भी नहीं करेंगे। तो मेरा यह भाग्य था जो बचपन में ही बाबा मिला। कोई भी बात की कमी नहीं थी, जो लौकिक याद आवे। बाबा का 100 गुना ज्यादा दिल का सच्चा प्यार मिला।

प्रश्नः- अभी हम कैसे बाबा से वो प्यार लेवें ताकि हम भी वह अनुभव कर सकें?

उत्तरः- उसके लिए ही तो यह संगठन हुआ है। हम देखते हैं कई बहनें कहती हैं योग का अनुभव थोड़ा कम है, सेवा में लग गये हैं, उसकी जिम्मेवारी में प्यार का अनुभव नहीं कर पाते। पहले तो अपने प्रति प्यार चाहिए। अभी आप योग के अनुभव द्वारा बाबा के प्यार का अनुभव कर सकती हो क्योंकि बाबा अभी फरिश्ते रूप में है। बाबा फरिश्ता बना ही है हमको फरिश्ता बनाने के लिए। क्योंकि हम सब बाबा के साथ हाथ में हाथ देकर जायेंगे। सदा श्रीमत पर चलना यही हाथ में हाथ है। हमको साथ चलना है तो फरिश्ता बनने का अभ्यास जरुर करना है। भले हम काम में कितना भी बिजी हैं लेकिन हमारा अन्तिम स्वरूप है ही फरिश्ता। तो वह अभ्यास करते रहना है।

किसी से प्यार तब होता है जब उससे कोई-न-कोई प्राप्ति होती है। तो जो हमारे मन चित में भी नहीं था वह सब हमको बाबा से प्राप्त हुआ है। बाबा ने ही हमको बुलाया, हमने थोड़ेही बाबा को पहचाना। बाबा को तो बच्चा पहचान नहीं सकता है, बाप ही पहचान देता है। तो हमको बाबा ने देखा, अपने पास बुलाया और अपना बनाया। तो बाबा ने हमको अपना बनाके कौन-कौन से खजाने दिये हैं? स्वमान की लिस्ट और सभी खजानों की लिस्ट अगर स्मृति में रहे तो ऑटोमेटिकली प्यार का अनुभव होगा और जहाँ प्यार होता है वहाँ बुद्धि जाती है और बाबा का डायरेक्शन ही है मेरे समान बनो। तो जब फरिश्ते बनेंगे तब तो समान बनेंगे। इस बात के ऊपर अटेन्शन और अण्डरलाइन करो कि मुझे बाप समान फरिश्ता बनना ही है और अनुभव करना ही है।

प्रश्नः- कुछ रत्न बहुत समीप होते, कुछ दूर रह जाते, यज्ञ की पालना कॉमन है, चाहे वो मधुबन है चाहे सेवाकेन्द्र, लेकिन किसी-किसी का कनेक्शन बड़े यज्ञ के साथ अधिक है, हम सब भी यज्ञ के समीप आ जायें, उसके लिए आप कोई राज़ बतायें?

उत्तर:- (दादी जानकी) - यज्ञ में समर्पण होना माना मेरा कुछ नहीं। बाबा को फॉलो करना माना मन, वाणी, कर्म श्रेष्ठ हो। अन्दर रहते हैं या यज्ञ से बाहर सेवा पर जाते हैं, हमारा तो यही काम है कि सफल करना और सफल कराना है, यह कभी भूले नहीं। ब्राह्मण वो जो सफल कराना सीखे। सेन्टर बाबा का स्थान है इसलिए कोई यह नहीं समझे कि यह फलाने का सेन्टर है। बाबा के स्थान में जो कोई कुछ भी सफल करता है, उसे हम अपना समझके यूज़ न करें और देने वाले भी ऐसे न समझें यह हमने दिया है या हम कर रहे हैं, यह भी नहीं ख्याल कर सकते हैं। तो यज्ञ से इतना सच्चाई और प्रेम का हमारा जो संस्कार है, वो हमें यज्ञ के समीप लायेगा। भले सबका पार्ट अपना है, फिर भी दादियों के पुरुषार्थ में समानता है। यज्ञ, बाबा और परिवार हर एक के दिल में नेचरल है, बनावटी नहीं है, टैम्प्रेरी नहीं है। ऐसे नेचुरल प्यार हो तो समीप आयेंगे।

प्रश्न:- कई सोचते हैं मधुबन में तो करने वाले बहुत हैं, अपने सेन्टर पर तो 2-4 ही हैं, पहले अपना ध्यान रखना चाहिए या मधुबन का? क्योंकि अपना सेन्टर भी तो संवारना है?

उत्तर:- जो बेहद यज्ञ में जितना करता है, उतनी उसकी बरक्कत होती है, उसे कभी कमी नहीं पड़ती। लेकिन जो सोचता है यज्ञ में बहुत करने वाले हैं... उनके पास कभी बरक्कत नहीं होती। अगर मेरे अन्दर यज्ञ के प्रति प्यार नहीं है, तो देने वाला भी प्यार से नहीं देगा। उसका यज्ञ से प्यार कैसे जुटेगा, वह बाबा के समीप कैसे आयेगा इसलिए हर बात में पहले यज्ञ याद आना चाहिए। यह है भावना, यज्ञ के प्रति जितनी भावना रखो, हमारा तो भला सबका भला इसमें ही है। हमारे तन, मन को सम्बन्ध को शक्ति देने वाला यज्ञ है। ड्रामा प्लैन अनुसार बाबा ने ऐसे संस्कार बनाये हैं, आज भी इसी आधार पर मैं जी रही हूँ। यज्ञ का पहन रहे हैं। विदेश की कोई चीज़ यूज़ नहीं करती हूँ, यज्ञ का ही पहनती हूँ तो तन की सम्भाल भी यज्ञ से हुई है। यज्ञ का खाया है, यज्ञ की सेवा की है, उससे मन भी मजबूत है। कोई चलायमानी या डोलायमानी नहीं हो सकती। कोई मेरी खास खातिरी करे, मुझे कोई जरुरत नहीं है। इतना नशा, खुशी है जो कभी कम नहीं हो सकता क्योंकि करनी से नशा होगा, धारणा से खुशी होगी। प्रैक्टिकली नर करनी ऐसी करे तब नर नारायण बनें, लक्षण ऐसे धारण करेंगे तब तो लक्ष्मी-नारायण बनेंगे ना। तो करनी और कथनी समान हो.. कोई जरुरत नहीं है बताने वा पूछने की लेकिन प्रैक्टिकल करने की है।

प्रश्न:- हम समर्पित यज्ञ में हुए हैं, यज्ञ से हम सेवास्थानों पर सेवा करने के लिए गये हैं, परन्तु जैसे दादियों को यह कभी विस्मृति नहीं होती, इसलिए जो कुछ उन्हें मिलता है, उन्हें पहले यज्ञ याद आता है, पीछे सेवाकेन्द्र तो क्या सचमुच दादी इससे ही हमारी अवस्था अच्छी रहेगी?

उत्तर:-(गुल्जार दादी) वैसे भी गाया हुआ है कि ब्राह्मण कहाँ से पैदा हुए? हमारा सरनेम ब्रह्माकुमारी है, तो यज्ञ रचा ब्रह्मा बाबा ने और हम ब्राह्मण यज्ञ की रचना हैं, यह हमको स्मृति है तो नशा भी रहेगा और सर्विस करने में भी उमंग आयेगा। बाबा यज्ञ (मधुबन) में रहते थे, तो हमारा बाबा से प्यार है माना यज्ञ से प्यार है। अगर बाबा से प्यार कम है, पैसे से प्यार है तो फिर वो देखेंगे कि मैं अपना सेन्टर चलाऊं या यज्ञ में भेजूँ! लेकिन अगर बाबा से प्यार है तो बाबा यज्ञ को चला रहा है और मेरा बाबा से प्यार है तो मैं कहाँ भेजूँगी! यज्ञ में ही भेजेंगे ना, यज्ञ में भेजने से यज्ञ सफल होता है। हमारा यज्ञ से प्यार कम है और सेन्टर से प्यार ज्यादा है इसलिए पहले सेन्टर भरे, सेन्टर को तो चलाना है ना, यह सब ख्याल जो आता है, तो मैं समझती हूँ कि बाबा से प्यार की कमी है। बाबा से प्यार है तो बाबा के यज्ञ से भी प्यार होगा। बाबा से प्यार कम है तो यज्ञ से भी प्यार कम है। हमने यह भी देखा है कि जो भी यज्ञ में करता है, उसका सेन्टर सदा भरपूर रहता है। उसको कोई कमी नहीं आती है क्योंकि कायदेमुज़ीब चलने से सबकुछ अच्छा रहता है। यज्ञ हमारा है, हम यज्ञ के हैं तो बड़ा घर जरुर याद आयेगा। बाबा याद आयेगा और बाबा का घर याद आयेगा। इससे अवस्था अपने आप अच्छी रहती है। मेहनत नहीं करनी पड़ती है।

प्रश्न:- दादियों जैसी सबमें यज्ञ के प्रति भावना जाग्रत हो जाये, उसके लिए क्या करें? कई बहन भाई हैं जो अपनी बड़ी दादियों तक पहुँच भी नहीं सकते, तो वो कैसे प्यार और पालना लें और यज्ञ के प्रति उनका आकर्षण बढ़े? यज्ञ मेरा है, मैं बाबा की हूँ, यह भावनायें जाग्रत कैसे हो?

उत्तर:- (दादी जानकी) - यह स्थूल बात नहीं है, स्थूल में आते हैं तो अपेक्षायें रखते हैं। सूक्ष्म है, कई ऐसी आत्मायें हैं, इतनी अच्छी भावनायें रखी है, जो ऐसी भावना से उनके स्थान भी अच्छे चल रहे हैं। खुद भी बाबा के प्यार की शक्ति से चल रहे हैं। इतने इमानदार हैं जो अपने प्रति एक पाई भी खर्चा नहीं करेंगे। गुप्त कमाके अपना किराया कई सालों से दे रहे हैं। जो एकनामी और एकॉनामी से चलने वाले हैं उनके लिए बरक्कत हैं। कई नये बाबा के बच्चे पुरानों से भी अधिक इमानदारी, वफादारी से चल रहे हैं। तो भगवान के घर में जो आज्ञाकारी,

वफादार, इमानदार है, उसके लिए सब सहज है। भविष्य की बात तो पीछे है, अभी जिसने जो किया है सो पाया है। दूसरा जो मैं करूँगी मुझे देख और करेंगे, छिपता नहीं है इसलिए खुद को खबरदार रहना है। इसमें नये पुरानों की बात नहीं है, यह है आज्ञाकारी, इमानदार, वफादार रहने की बात। कोई भी रह सकता है। वफादार माना श्रीमत पर चलना। जरा मनमत नहीं, जरा कोई परमत का प्रभाव नहीं। एक बाबा दूसरा न कोई। इमानदारी से सच्चा पोतामेल बाबा को दिखाना, भगवान का ईमानदार बच्चा बनना उसके रिटर्न में सदा सन्तुष्ट तृप्त आत्मा है।

प्रश्न:- आपने ऐसा कौन-सा गुप्त गहरा पुरुषार्थ किया है, जिससे आपकी यह स्टेज आज हम सब अनुभव करते हैं? आपको देखने से लगता है हम बापदादा से मिल रहे हैं?

उत्तर:- (गुल्जार दादी) मैं समझती हूँ कि मेरा अटेन्शन है लेकिन अटेन्शन के साथ एक मुझे जैसे बाबा ने भाग्य भी दिया है। भाग्य और अटेन्शन दोनों ही रहता है और जितना समय यह पार्ट चलता है ना, बाबा शरीर में आता है, लेकिन बार-बार शिवबाबा, ब्रह्माबाबा की प्रवेशता होने के कारण हमको अशरीरी बनना बहुत सहज लगता है क्योंकि इतना टाइम जब बाबा आता है तो हम और कहाँ तो नहीं होते हैं, शरीर में ही होते हैं। लेकिन स्वीट साईलेन्स का अनुभव होता है, तो यह बार-बार साईलेन्स का जो अनुभव बाबा कराता है वतन में, तो उसके संस्कार भी कुछ भर जाते हैं। और हमको अशरीरी बनना या स्वीट साईलेन्स के अनुभव में जाना सहज हो जाता है, ड्रामा और भाग्य अनुसार...।

प्रश्न:- आप हम बहनों से क्या उम्मींद करते हो, आप अपने दिल की बात बतायें? ताकि वो उम्मीदें हम पूरी कर सके।

उत्तर:- (दादी गुल्जार) हम चाहते हैं क्या! लेकिन बाबा चाहता है, बाबा का अटेन्शन अभी समय के ऊपर और स्वयं के ऊपर दोनों तरफ का है। स्वयं बनेंगे तब समय नजदीक आयेगा। समाप्ति के समय को लाने वाले कौन? आह्वान करने वाले कौन? तो बाबा हमेशा कहता है कि जितना-जितना आप तीव्र पुरुषार्थ करेंगे, उतना ही समाप्ति का समय समीप आयेगा क्योंकि आप मन्सा, वाचा, कर्मणा अर्थात् चेहरे और चलन द्वारा सम्पूर्ण बनेंगे या समान बनेंगे तभी समय समीप आयेगा। तो बाबा यह चाहता है और बार-बार कहता है, एक तो मम्मा को फॉलो करो। जैसे मम्मा का बाबा की मुरली से अति प्यार था, कई बार पढ़ती थी, ऐसे रोज़ बाबा की मुरली बार-बार पढ़ो। मुरली बाबा का स्वरूप है। बाबा वाणी में जो बोलता है, उससे साकार भासना आती है। मुरली सुनते समय बाबा मेरे से पर्सनल बोल रहा है। तो बाबा तो हमारे सामने होता ही है, बाबा की मुरली से रोज़ हमको श्रीमत मिलती है और सभी को मिलती है चाहे पुराने है, चाहे नये हैं, छोटे हैं, चाहे बड़े।

तो चेक करो कि जो आज बाबा ने मुरली में श्रीमत दी उसको मैंने फॉलो किया, तो नेचुरल है श्रीमत मानने से बाबा की दुआयें मिलती हैं। हरेक को बाबा रोज़ यही कहता है कि समान बनो सम्पूर्ण बनो। समान और सम्पूर्ण बनने के लिए योग की शक्ति को और बढ़ाना है। फरिश्ता स्वरूप हो जायें, सेकेण्ड में बिन्दु लग जाये। क्वेश्चन और आश्चर्य की निशानी नहीं लगे। अगर हम इस अटेन्शन में रहें तो छोटे भी बड़ों से आगे जा सकते हैं और कई जाते भी हैं तो सभी को वरदान मिला हुआ है सिर्फ अटेन्शन देने की कमी है। वो अटेन्शन को अण्डरलाइन करें तो छोटे भी सुभानअल्लाह हैं। ऐसे छोटों को बाबा बहुत मदद करेगा। रोज़ अमृतवेले फरिश्तेपन की अवस्था में बैठो तो फरिश्ते रूप बाबा के प्यार का अनुभव जिगरी होगा।

(दादी जानकी) - मैं कभी कभी अपने को देखती हूँ, मुझे परिवार के लिए अति प्यार है। जितना बाबा के लिए प्यार है, उतना परिवार के लिए प्यार है, उतना ही विश्व की अनेक आत्माओं के लिए, सम्बन्ध-सम्पर्क वालों के लिए भी प्यार है क्योंकि दुनिया वाले बिचारे नाउम्मींद हैं। कोई उम्मींद दिखाई नहीं पड़ती है और हमारे में भगवान ने उम्मीदें रखी हैं। बाबा कहते अभी आप उम्मीदों का सितारा हो, एक दिन सफलता का सितारा जरुर बनेंगे। बाबा की उम्मीदों को पूरी करना ही हमारी सच्ची लाइफ है। हिम्मते बच्चे मददे बाप..., सच्ची दिल पर साहेब राज़ी..., नियत साफ मुराद हांसिल... यह लाइफ है। कभी नहीं कहेंगे मैंने किया, बाकी हिम्मत जरुर रखी है, हिम्मत से हार नहीं खाई है। सच्चाई है तो विश्वास है कि हुआ ही पड़ा है। स्थिति हमारी तो मदद बाप की, यह हरेक कर सकता है। तो हमारी भावना यही है कि जो बाबा कराना चाहता है वही आप सब करेंगी, ऐसे है ना। बाबा और ड्रामा में हुआ ही पड़ा है। पर संकल्प करेंगे करना है तो अब, कल किसने देखा है।

1. बुद्धि क्लीन हो, लाइन क्लीयर हो एक बाबा दूसरा न कोई।
2. किसी को न देखो क्योंकि हरेक का ड्रामा में पार्ट है, तुमको क्या करना है ओटे सो अर्जुन।
3. जो करना है अब कर लें। इसमें पुरानों नयों की बात नहीं है, बुद्धि से समझके करने की बात है। बुद्धि में जैसी बात रखेंगे वो

होगा। जो संकल्प जैसे करेंगे वो साकार होता है। इससे बाबा से आत्मा में नई ताकत आती है, इसीलिए शरीर में आत्मा बैठी है वो भी निमित्त मात्र। अपनी नेचर नेचुरल बाप समान बनाओ। हमारी नेचर सतोप्रधान बन जाये तो प्रकृति के तत्वों और आत्माओं को सबको मदद मिलेगी। हम आत्माओं को तो सतोप्रधान बाबा बना रहा है। हम आत्मायें प्रकृति को सतोप्रधान बनायेंगे तभी सतयुग में राज्य करेंगे। उसके पहले जरा भी रजो, तमो हमारे अन्दर मिक्स न हो। यह अपने आपको चेक करके सतोगुणी बनें और सतोप्रधान बन जायें। हमारा स्वभाव भावना वाला ऐसा हो जो कम्पलीट ऐसा स्वच्छ हो जिससे अनेक आत्माओं के मच्छर मक्खी जितना भी कोई माया का अंश न रह जाये। हम ही करने वाले हैं और हम ही तो सब सतयुग में आने वाले हैं।

दादी प्रकाशमणि जी की अनमोल शिक्षायें

"प्रवृत्ति में रहते पर वृत्ति में रहो"

(गीता पाठशाला चलाने के निमित्त बने हुए भाई-बहनों प्रति)

आप सबको देख प्यारे बाबा का एक बोल याद आता। बाबा कहते तुम बच्चों को सच्ची-सच्ची गीता सबको सुनानी है, तुम घर-घर में सच्ची गीता पाठशाला खोलो। गीता के भगवान को सिद्ध करो, इसी पर ही तुम्हारी विजय होनी है। ईश्वरीय विश्व विद्यालय नाम से मनुष्यों का इतना ध्यान नहीं जाता लेकिन जब सुनते सच्ची गीता पाठशाला तो नाम सुनने से ही अन्दर आता चलकर देखें यहाँ क्या सुनाते हैं।

1) आप सब सच्ची गीता पाठशाला के निमित्त बने हुए सच्चे सेवाधारी हो। जो निमित्त बनते उनकी बाबा अपरमअपार महिमा गाता। ब्रह्माकुमारियों ने तो अपनी जीवन सेवा के लिए अर्पित की, उन्हों का महान भाग्य है लेकिन उनसे भी अधिक भाग्य आपका है। उन्होंने सब कुछ त्याग कर सेवाकेन्द्र बनाया है। परन्तु आपको तो बाबा ने दो घोड़े दिये हैं, जिन पर हाथ रखकर टप-टप करके चलना है। दो घोड़े ब्रह्माकुमारियों को नहीं हैं। शोकेस के सैम्पुल आप हैं। शो केस में हमेशा सैम्पुल को रखा जाता क्योंकि आप ही दूसरों के सामने बाबा के ज्ञान को प्रत्यक्ष करने वाले हो इसलिए आपकी बहुत वैल्यु है। तुम्हारे लिए यह पाठ है कि रहना है प्रवृत्ति में लेकिन पर वृत्ति से रहना है। आपको सबके साथ में रहते नष्टोमोहा का पाठ पढ़ना है। यह सैम्पुल आप लोगों का है। ब्रह्माकुमारियों के आगे कोई भी पेपर आये तो नो फिकर क्योंकि वह बाबा की सर्विस पर हैं, परन्तु आपके आगे चार पेपर सदा ही खड़े हैं। कहा जाता है ये ज्ञान इतनी ऊंची मंजिल है, चढ़े तो चाखे ज्ञान-रस, गिरे तो चकनाचूर.... यह है लम्बी खजूर। यह कहावत प्रवृत्ति में रहने वालों के लिए है। चढ़ना भी जरूर है, रस पीना भी जरूर है लेकिन चढ़े तो कैसे? क्योंकि इधर है प्रवृत्ति, उधर है समाज, इधर है धन्धा और उधर है बाबा। यह सब पेपर आपके सामने हैं।

2) प्रवृत्ति वालों को अनेक चिंतायें रहती, आज बेटी बड़ी हुई है, शादी करनी होगी, यह करना होगा। इसके लिए धन्धा करें, पैसा इकट्ठे करें। चिन्ताओं की टोकरी सदैव सिर पर रहती। बहू बेटी में ममता हो जाती। ऐसे सबके साथ रहते हुए, सब पेपर सामने होते हुए नष्टोमोहा रहें। यह सैम्पुल आप सबका है। आपको बुद्धि में अगर रहता बाबा यह प्रवृत्ति तेरी है तो सदा बेफिकर रहते। ऐसे कमल फूल का प्रैक्टिकल मिसाल आप लोग हैं।

3) गृहस्थी है उसके लिए धन्धा भी जरूर करना पड़ता, आज धन्धा अच्छा चलता, कल नहीं चलता। कई प्रकार के पेपर आपके सामने आते, अज्ञान में तो मनुष्य को धन्धे में अगर घाटा जो जाये तो शॉक आ जाता परन्तु ज्ञानवान कहते यह तो ड्रामा है। फिकरातों के बीच रहते बेफिकर रहना। निरसंकल्प रहना, ये सैम्पुल आप हैं। जो कमाते हुए भी अनासक्त रहते वही सैम्पुल बनते हैं। आज का धन्धा-धोरी भी क्या है? आज नौकरी कैसी है, कल कैसी है। यह अप-डाउन रोज़ होता। परन्तु यह सब होते भी नथिंगन्यु। अज्ञानियों में टेन्शन रहता और हम कहते नो टेन्शन बट अटेन्शन।

4) समाज में रहते समाज को निभाना भी और समाज की गाली भी खाना, कभी समाज दुश्मन बनेगी, कभी कहेगी बहुत अच्छा। यह तो पेपर आयेंगे ही। इन सबको पार करते हुए चलना यह है आप सबका सैम्पुल। अब आओ ब्राह्मणों की दुनिया में यहाँ भी कई पेपर आते। जायेंगे सर्विस करने, सर्विस अच्छी हुई तो खुशी होगी। नहीं हुई तो दिलशिकश्त होंगे। कभी-कभी आपस में भी मित्र के बजाए परममित्र बन जाते। यह संस्कारों का भी बहुत कड़ा पेपर है। किसी को मित्र बनाना तो सहज है परन्तु परममित्र को मित्र बनाना यही मीठी-मीठी पढ़ाई है। अच्छा!